महेन्द्र वर्मन – मत्तविलास प्रहसन (हास्य ग्रंथ)

पल्लवकालीन कला

इस काल में कलात्मक उन्नति का श्रेय नयनारों एवं अलवारों द्वारा प्रवर्तित भक्ति गीतों को दिया जाता है।

अभिष्ट देवताओं के मंदिर बनवाए गये तथा उनकी भित्तियों को नाना प्रकार की आकृतियों से अलंकृत किया गया।

उनमें विद्यमान वर्तुलाकार लिंग, असाधारण द्वारपाल, प्रभातोरण, त्रिमुख स्तम्भ आदि कला के आदर्श स्वरूप हैं।

पल्लव कला ही दक्षिण की द्रविड़ शैली का आधार बनी। पल्लव कलाकारों ने वास्तुकला को धीरे-2 काष्ठकला और कंदरा कला के प्रभाव से मुक्त करने का प्रयास किया। इससे दक्षिण भारतीय कला के तीन प्रमुख अंगों का जन्म हुआ – मण्डप, रथ एवं विशाल मंदिर।

प्रसिद्ध कलाविद पर्सी ब्राउन ने पल्लव वास्तु के विकास को चार शैलियों में बाँटा है। कठोर पाषाण को काटकर गुहा मंदिर का निर्माण किया ... पाषाणों को काटकर बनाये गये

(i) महेन्द्र शैली (610 - 640) ई० – महेन्द्रवर्मन प्रथम – मण्डप

(ii) मामल्ल शैली (640 - 674) ई० – नरसिंह वर्मन प्रथम "मामल्ल" – रथ

(iii) राजसिंह शैली (674 - 800 ई०) – नरसिंह वर्मन II ("राजसिंह")

(iv) नन्दिवर्मन शैली (800 - 900 ई०) – नन्दिवर्मन) (अपराजितशैली)

महेन्द्रवर्मन – वराह, महिष, पंचपाण्डव (आदिवराह, महिषमर्दिनी, रामानुज मंडप)

→ गुहा मंदिरों के स्थान पर पाषाणों ईंट की सहायता से इमारती मंदिर
→ शोर मंदिर (कांची का कैलाश मंदिर) का निर्माण
→ बैकुण्ठ पेरुमल मंदिर

अपेक्षाकृत छोटे मंदिर – उदा० – तंजोर, पडुकोट्टई, कांचीपुरम, महाबलीपुरम

जैसे – राजसिंह शैली – कांची का कैलाश मन्दिर, महाबलीपुरम के तटीय मंदिर

मामल्ल शैली – सप्त पैगोडा

Scanned with CamScanner